Solution of Practice Paper- 3
Class 12
Sub- Political Science (028)

Time: 3 hrs. **MM. : 80**

1. वर्ष 1917 में रूस में समाजवादी क्रांति हुई । 1
2. नाम की स्थापना 1961 में हुई । 1
3. गलत। 1
4. ग) इजराइल। 1
5. क) संसदीय लोकतंत्र। 1
6. सही। 1
7. यूरोपियन यूनियन। 1
8. सरदार वल्लभ भाई पटेल। 1
9. निज़ाम 1
10. 1953। 1
11. प्रधानमंत्री। 1
12. प्रधानमंत्री। 1
13. 1977। 1
14. श्री कांशी राम जी... बहुजन समाज पार्टी 1
15. ग) 17 वीं। 1
16. N.D.A। 1
17. (1+1+1+1=4)

17.1 b) अनुच्छेद 352 1

17.2 a) राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद 1

17.3 d) उपरोक्त सभी। 1

17.4 c) अंदरूनी गड़बड़ी की आशंका में। 1

18 (1+1+1+1=4)

18.1 c) एनडीए -3 1

18.2 d) 2019 1

18.3 b) भाजपा 1

18.4 a) भाजपा 1

19. शीतयुद्ध अर्थात दो महाशक्तियो (अमेरिका व सोवियत संघ) व उनके पिछलग्गू देशों के बीच वैचारिक मतभेद जिसमें रक्त रंजित युद्ध ना होकर केवल वाक युद्ध की स्थिति बनी रहती थी जैसे क्यूबा मिसाइल संकट के समय विश्व को लगा कि अब तो युद्ध हो कर ही रहेगा। 2

20. मानवाधिकारों की रक्षा में सक्रिय दो स्वयंसेवी संगठन :

1 एमनेस्टी इण्टरनेशनल 2 ह्यूमन राइट वाच 2

21. (1) सहकारी संघवाद को प्रोत्साहित करता है।

(II) सशक्त देश के लिए राज्यों को मजबूत करता है ।

(III) राष्ट्रीय सुरक्षा तथा आर्थिक नीतियों के बीच सामंजस्य बनाता है।

(IV) नीतिगत कार्यक्रमों का ढांचा तैयार करता है ।

(कोई दो) 2

22. (I) नई आर्थिक नीति के संदर्भ में ।

(II) देश के शासन में प्रांतीय दलों की भूमिका को स्वीकृति।

(III) विचारधारा की जगह कार्य सिद्धि पर जोर।

(IV)पिछड़ी जातियों के राजनीतिक और सामाजिक दावों को स्वीकृति।

(कोई दो) 2

अथवा

- भारत -- जवाहरलाल नेहरू ।
- घाना -- क्वामे एनक्रूमा।
- मिस्र -- गमाल अब्दुल नासिर।
- इंडोनेशिया -- सुकर्णो।
- यूगोस्लाविया -- जोसेफ ब्राज टीटो।

23. भारत की विदेश नीति के चार तत्व:- 4∗1=4

1. गुटनिरपेक्षता- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद भारत सहित अफ्रीका और एशिया के नव स्वतंत्र देशों ने गुटनिरपेक्षता को अपनाया अर्थात उस समय स्थापित US और USSR गुट में शामिल नहीं हुए। इस लिए वे बिना किसी दबाव के अपनी स्वतंत्र विदेश नीति बनाने में सफल हो पाए।
2. पंचशील सिद्धांत- भारत और चीन के मध्य 1954 में एक द्विपक्षीय समझौता हुआ जिसे पंचशील समझौता कहा जाता है। इस समझौते की शर्तें, बाद के वर्षों में अन्य देशों के साथ विदेश संबंध तय करने का आधार बनी।

3. शांतिपूर्ण सह अस्तित्व- भारत अपने पड़ोसी देशों एवं विश्व के अन्य देशों के साथ शांतिपूर्ण और परस्पर सहयोगात्मक संबंध बनाए रखना चाहता है।
4. उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद का विरोध- भारत ने दूसरे देशों पर अनाधिकृत अधिपत्य का हमेशा विरोध किया है, चाहे वो उपनिवेशवाद हो या साम्राज्यवाद।

या कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु

24. अभ्युत्थान का क्या अर्थ-

देश की लोकतांत्रिक राजनीति में तेज़ी से व बहुत बड़ी संख्या में लोगों की भागीदारी के बढ़ने को लोकतांत्रिक अभ्युत्थान कहा जाता है। इस सिद्धांत के आधार पर सामाजिक वैज्ञानिकों ने स्वतंत्रता के बाद भारत के राजनीतिक इतिहास में तीन अभ्युत्थानों की व्याख्या की है।

भारतीय राजनीति के तीन अभ्युत्थानों का वर्णन-

1. मतदाताओं की भागीदारी-1950-70 के दौरान केंद्र और राज्य स्तर पर वयस्क मतदाताओं की भागीदारी में उत्साह था। साक्षरता दर की कमी के बावजूद 45.7% मतदान हुआ।
2. पिछड़े वर्गों की राजनीति में भागीदारी- 1980 के बाद अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़े वर्गों की भागीदारी में वृद्धि हुई। बहुजन समाजवादी पार्टी (BSP) का 1984 में गठन हुआ। इससे उनकी सत्ता में भागीदारी का मार्ग प्रशस्त हुआ।
3. युवाओं की भागीदारी-1990 से प्रतिस्पर्धी चुनावी बाज़ार में युवाओं की भागीदारी बढ़ी।

25. सुरक्षा परिषद (UNSC) के कार्य- (कोई चार) 4∗1=4

1. विश्व शांति के लिए प्रयासरत- सुरक्षा परिषद, विश्व शांति व सुरक्षा के लिए वह संबंधित पक्षों को विवाद के निपटारे हेतु विचार विमर्श का मंच प्रदान करता हैं।
2. मध्यस्थ की भूमिका- सुरक्षा परिषद पंचों, मध्यस्थों तथा अंतरराष्ट्रीय न्यायालय द्वारा विवादों के निपटारे का प्रयास करती है।
3. दण्डात्मक भूमिका- बातचीत के सभी प्रयासों के विफल होने की स्थिति में दोषी राष्ट्र के विरुद्ध दंड स्वरूप सुरक्षा परिषद आर्थिक प्रतिबंध लगा सकती है।
4. सैन्य कार्यवाही- अंतिम उपाय के रूप में सुरक्षा परिषद, दोषी राष्ट्र के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही कर सकती है। किसी सदस्य देश की सेना को शांति सेना के रूप में भेजने का आदेश UNSC द्वारा दिया जाता है।
5. अन्य कार्य- नए सदस्यों का प्रवेश, सदस्यों का निष्कासन, महासचिव का चयन, अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति, चार्टर में संशोधन आदि विषयों में सुरक्षा परिषद की सहमति आवश्यक होती है।

या कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु

अथवा

1992 में UNO की आमसभा में स्वीकृत प्रस्ताव में UNO संगठन की निम्नलिखित कमियों को स्वीकारा।

1. सदस्य संख्या कम होना- सुरक्षा परिषद अब राजनीतिक वास्तविकताओं का प्रतिनिधित्व नही करती।
2. विकसित देशों का दबाव- UNSC के फैसलों में पश्चिमी मूल्यों और हितों की छाप होती है और इन फैसलों में चंद देशों का दबदबा होता है।

3. असमान प्रतिनिधित्व- सुरक्षा परिषद में विश्व के सभी देशों का समान प्रतिनिधित्व नही है।

UNO की ओर से सुधार के लिए किया-

1997 में UNO के महासचिव कोफी अन्नान ने किस प्रकार के सुधार किए जाएं, इसके लिए जांच शुरु की। सुझाव भी प्रस्तुत किए गए।

26. 'मैकडोनाल्डीकरण'- मैकडोनाल्ड, एक प्रकार का अमेरिकी खाद्य पदार्थ, US की ओर संकेत करता है। आज विश्व के बहुत से देशों में मैकडोनाल्ड जैसी अनेक अन्य वस्तुओं का प्रयोग हो रहा है। युवा वर्ग पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण कर रहे है, उनका खान-पान और व्यवहार बदल गया है। इसी आधार पर 'मैकडोनाल्डीकरण' का अर्थ अमेरिका के सांस्कृतिक वर्चस्व से लिया जाता है।

'सांस्कृतिक समरूपता'- 'सांस्कृतिक समरूपता' का अर्थ है, विश्व में सभी देशों की संस्कृति का समान रूप से एक हो जाना। वैश्विकरण के सांस्कृतिक प्रभावों को देखते हुए इस बात को बल मिला है कि शेष विश्व पर पाश्चात्य/ पश्चिमी संस्कृति लादी जा रही है। इससे विश्व की सांस्कृतिक विविधता को खतरा उत्पन्न हो गया है।

2+2=4

अथवा

वैश्वीकरण में प्रौद्योगिकी का योगदान- 4*1=4

1. संचार के साधनों में विकास- नवीनतम संचार के साधनों से विचारों के प्रवाह में तेज़ी आई है। संचार के साधनों ने विचारों अर्थात ज्ञान के आदान प्रदान को बढ़ावा दिया है।
2. तीव्र परिवहन के साधनों का होना- तीव्र परिवहन के साधनों ने पूँजी, वस्तुओं और श्रम के आवागमन को आसान एवं तीव्र कर दिया है। अब इन साधनों की मांग और पूर्ति वैश्विक स्तर पर सम्भव हो पाई है।
3. मुद्रण की तकनीक- मुद्रण ने विश्व के कोने कोने से विचारों को पुस्तक बद्ध किया है। जहाँ व्यक्ति स्वयं नहीं पहुंच पाता, उसकी पुस्तकें या लेखन विश्व के अन्य छोर पर बैठे व्यक्ति को प्रभावित करती हैं। इस प्रकार पुस्तकें विचारों के प्रवाह का साधन है।
4. कंप्यूटर एवं इंटरनेट- कंप्यूटर एवं इंटरनेट की सहायता से आज हम विश्व के किसी भी क्षेत्र या विषय के बारे में जान सकते है अपितु इसने पूँजी के प्रवाह को भी बढ़ाया है।

या कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु

27. शीत युद्ध काल में हथियारों की होड़- 2+2=4

हथियारों के अधिकतम उत्पादन का दौर-

1. स्वयं के हथियार- दोनो महाशक्तियां, दूसरी महाशक्ति से युद्ध के लिए अधिक से अधिक आधुनिकतम एवं घातक हथियार बनाने की रेस में शामिल थी। परमाणु हथियारों का उत्पादन भी इसी बात का प्रमाण था।

2. गुट के सदस्य देशों के लिए हथियार- अपने गुट को अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए सदस्य देशों को हथियार उपलब्ध करवाने के लिए दोनों महाशक्तियां तत्पर थी। इसके लिए दोनों के पास शस्त्रों का एक बड़ा ज़खीरा था।

शीत युद्ध काल में हथियारों पर नियंत्रण-

शस्त्र नियंत्रण की संधियों का दौर-

1. शस्त्रों के उत्पादन पर रोक- विश्व के बहुत से देश SALT, START, NPT जैसी संधि समझौते में शामिल हो रहे थे। इनकी पहल करने वाले स्वयं बड़े देश ही थे।
2. शांतिपूर्ण वार्ताओं की शुरुआत- तृतीय विश्वयुद्ध की संभावना ने दोनों महाशक्तियों को पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया। संधि समझौते करने के लिए वे स्वयं एक मंच पर बातचीत के लिए आगे आए तथा अन्य देशों को भी आमंत्रित किया।

या कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु

28. 5*1=5

प्रयोग की गई जानकारी की क्रम संख्या	संबंधित अक्षर	राज्य का नाम
1)	C	बांग्लादेश
2)	D	मालद्वीप
3)	E	पाकिस्तान
4)	B	नेपाल
5)	A	श्रीलंका

दृष्टिबाधित छात्रों के लिए **5*1=5**

1. 1985
2. 2001
3. भारत पाकिस्तान
4. काठमांडू (नेपाल)
5. भारत, श्रीलंका

29.

29(i) सरदार वल्लभभाई पटेल । 1

29(ii) कार्टून दर्शाता है कि रियासतों के शासकों ने लोगों का दमन और शोषण किया । 2

29(iii) सरदार बल्लभ भाई पटेल देसी रियासतों के भारत में विलय के मामले को सफलतापूर्वक हल कर सके । 2

<u>केवल दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए</u>

29.1 सरदार वल्लभभाई पटेल । 1

29.2 मणिपुर के महाराजा को भारत सरकार द्वारा आश्वासन दिया गया था कि मणिपुर की आंतरिक स्वायत्तता बनाई रखी जाएगी । 2

29.3 हैदराबाद की प्रजा में से तेलंगाना के किसानों (कृषको) और जमींदारों ने निजाम की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध विद्रोह किया था । 2

30.1969 में पार्टी के विभाजन के पश्चात, कांग्रेस प्रणाली की पुनर्स्थापना के लिए उत्तरदायी परिस्थितियां :- 6

1. अनेक समाजवादी कदम जैसे 10 सूत्री कार्यक्रम, बैंकों एवं बीमा कंपनियों का राष्ट्रीय करण, ग़रीबों के हितों में कार्यक्रम ।

2. भूमि सुधार तथा भू-परिसीमन एक्ट, गरीबी हटाओ कार्यक्रम ।

3. ,दमितो, भूमिहीन मजदूरों, दलितों, आदिवासियों, महिलाओं और बेरोजगार युवाओं में पार्टी के प्रति समर्थन पैदा करना ।

4. 1971 के चुनाव में अप्रत्याशित सफलता ।

5. 1971 के भारत-पाक युद्ध में विजय को इंदिरा गांधी के सुदृढ़ नेतृत्व के परिणाम के रूप में देखा गया ।

6. 1972 में हुए विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की सफलता ।

7. लोकसभा और विधानसभा के चुनावों में कांग्रेस की दोहरी सफलता ने कांग्रेस प्रभुत्व की पुनर्स्थापना की ।

8.इंदिरा गांधी ने पार्टी को पुनः खड़ा किया जो पार्टी को दिए गए सुदृढ़ नेतृत्व पर आधारित था ।

9.इसका संरचनात्मक ढांचा कमजोर था, परंतु इसमें गुट बंदी नहीं के बराबर थी । कांग्रेस के स्वभाव में परिवर्तन करके कांग्रेस पार्टी को पुनर्स्थापित किया ।

(अथवा कोई अन्य उपयुक्त कारण) ।

अथवा OR

भारत में संघ सरकार तथा न्यायपालिका के बीच संघर्ष के कारण :-

1.मौलिक अधिकारों में संशोधन करने का संविधान एक मुद्दा ।

2. क्या सरकार संशोधन करके संपत्ति के अधिकार में कटौती कर सकती है ।

3. संसद ने राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों को लागू करने के लिए मौलिक अधिकार में संशोधन और परिवर्तन किए।

4. केशवानंद भारती केस में न्यायपालिका का कहना था कि संसद भी संविधान के मूल ढांचे में परिवर्तन नहीं कर सकते ।

5.सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की पद रिक्ति को भरने के लिए वरिष्ठ न्यायाधीश को पदोन्नत नहीं किया गया ।

6. इस संघर्ष का चरम बिंदु था कि इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इंदिरा गांधी के लोकसभा में चुनाव को रद्द कर दिया ।(अथवा कोई अन्य उपयुक्त कारण) ।

31. यूरोपीय संघ को आर्थिक सहयोग वाली संस्था से बदलकर एक राजनीतिक रूप देने के लिए उत्तरदाई कारक हैं :- 3∗2=6

1. 1949 में स्थापित यूरोपीय परिषद राजनीतिक सहयोग की दिशा में एक कदम बढ़ाना था ।

2. 1957 में यूरोपीय इकोनामिक कम्युनिटी के गठन से राजनीतिक चर्चा शुरू हुई जिससे यूरोपीय पार्लियामेंट का गठन हुआ ।

3.सोवियत संगठन के विघटन ने यूरोप में इस प्रक्रिया को तेजी प्रदान की और 1992 में इस प्रक्रिया की परिणति यूरोपीय संघ के रूप में हुई ।

4. इसने अपना झंडा, स्थापना दिवस, गान(गीत) और अलग मुद्रा को बनाया ।

5. विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के कारण इसका अपना राजनीतिक प्रभाव भी है । (किन्ही तीन को व्याख्या सहित) ।

अथवा

21वीं सदी में भारत को को एक उदीयमान वैश्विक शक्ति के रूप में देखे जाने के प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं:-

- लगभग 135 करोड़ की विशाल जनसंख्या प्रमुख मानवीय संसाधन के रूप में देखी जा रही है।
- आर्थिक परिप्रेक्ष्य से 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य, एक विशाल प्रतिस्पर्धी व्यापार केंद्र, तथा संपूर्ण विश्व में 200 मिलियन भारतीय प्रवासियों के साथ भारत की प्राचीन समावेशी संस्कृति भारत को एक केंद्र के रूप में स्थापित कर रही है।
- सामरिक दृष्टिकोण से भारत की सैन्य शक्ति परमाणु शक्ति इसे आत्मनिर्भर बनाती है।
- विज्ञान और तकनीक में 'मेक इन इंडिया' योजना भारतीय अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाने की ओर अग्रसर है.।

32. भारत जैसे देशों के लिए सोवियत संघ के विघटन के प्रमुख परिणामों का विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है:- 6

1. भारत के परंपरागत मित्र सोवियत संघ का अवसान हो गया।
2. भारत की अमेरिका के साथ सम्बन्धों में नजदीकी बढ़ी।
3. भारत ने रूस के सम्बन्धों को पुन: स्थापित किया।
4. भारत ने नए सिरे से CIS के साथ सम्बन्धों को बनाया।
5. नाम की भूमिका में परिवर्तन आया।
6. विकासशील व अल्प-विकसित राष्ट्रों के बीच संबंध सशक्त हुए.।

अथवा

21वीं सदी में, अरब क्रान्ति के रूप में 2009 में पश्चिम एशियाई देशों में लोकतन्त्र के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ। ट्यूनिशिया में प्रारम्भ हुए अरब स्प्रिंग ने अपनी जड़ें जमा लीं जहां जनता द्वारा भ्रष्टाचार, बेरोजगारी तथा गरीबी के खिलाफ संघर्ष प्रारम्भ किया गया। यह संघर्ष एक राजनीतिक आंदोलन के रूप में परिवर्तित हो गया क्योंकि जनता तत्कालीन समस्याओं को निरंकुश तानाशाही का परिणाम मानती थी। ट्यूनिशिया में उदित मांग पश्चिम एशिया के मुस्लिम बहुल प्रान्तों में फैल गयी। होसनी मुबारक, जो 1979 के बाद से मिस्र में सत्ता में थे। एक बढ़े स्तर पर लोकताँत्रिक विरोध प्रदर्शन के परिणामस्वरूप ध्वस्त हो गए। इसके अतिरिक्त अरब क्रांति का प्रभाव यमन, बहरीन, लीबिया और सीरिया जैसे अरब देशों में भी देखा गया, जहां जनता द्वारा इसी प्रकार के विरोध प्रदर्शन ने पूरे क्षेत्र में लोकताँत्रिक जागृति को जन्म दिया।

****